‘नन्ही सी जान’
चीटी की यह नही पहचान!

गीता धर्मराजन
चित्राँकनः अतनु रॉय

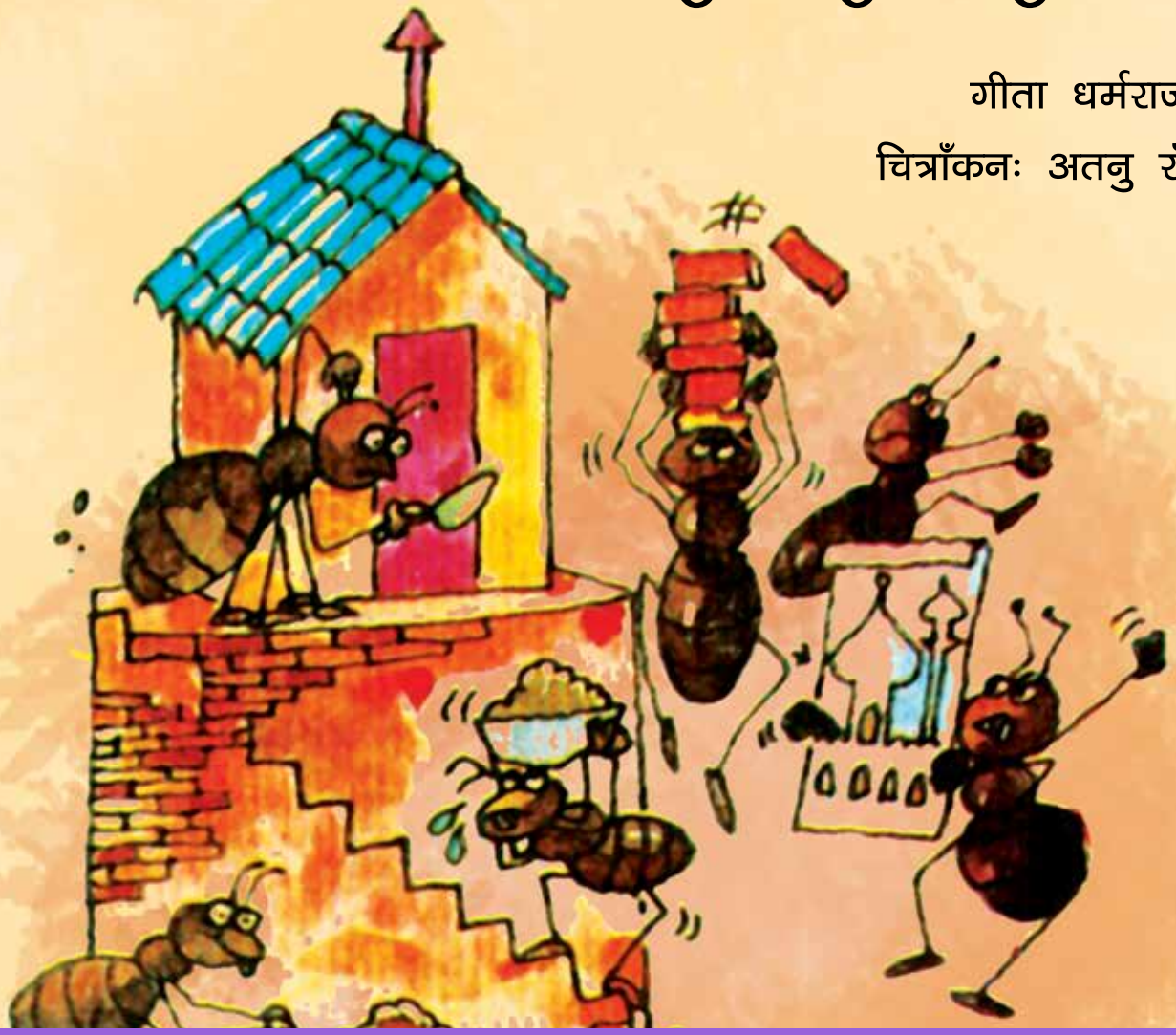

कथा की ३००एम थिंकबुक

इधर-उधर जाती हुई व्यस्त चीटियों अच्छी तरह जानती हैं, वह कहाँ जा रही हैं। हरेक चींटी 50,000 चींटियों वाले एक बड़े चींटी-समुदाय का अंग होती है जिस पर रानी-चींटी राज करती है।

चींटी-समाज में हर चींटी का स्थान और काम पहले से ही निश्चित होता है।

चींटियों का घर बगीचे के किसी पत्थर के नीचे, बांबी के नीचे अथवा तुम्हारे रसोघर के नीचे हो सकता है। चींटी समुदाय की प्रत्येक चींटी सुरक्षित होती है।

चींटियों के घर में कई घुमावदार सुरंग और कमरे होते हैं – मरी हुई चींटियों तक को दफ़नाने के लिए एक शव–गृह भी!

चींटी–घर में रहने वाली सारी चींटियाँ, रानी–चींटी का खास ध्यान रखती हैं ताकि वह आराम से अंडे दे सके – पूरे जीवन काल में लगभग 1 अंडा प्रति दस मिनट।

मज़दूर-चींटियों उन अंडों को एक कमरे में ले जाती हैं जहाँ नर्स-चींटियाँ उन्हें उनके आकार के अनुसार छाँटती हैं।

जब उनमें से लार्वा निकलने लगता है तो वे उन्हें एक दूसरे कमरे में ले जाती हैं। इस तरह अंडों के विकास के हर चरण के लिए खास तापमान वाला एक विशेष कमरा होता है!

चीटियाँ

- चीटी-घर की सारी चीटियाँ रानी-चीटी के ही बच्चे होते है।
- चीटी-घर और रानी-चीटी को सिपाही-चीटियाँ दुश्मनों से बचाती है।
- कुछ चीटियाँ बहुत अच्छी नर्स होती है।
- निर्माण-विभाग की चीटियाँ, चीटी-घर की मरम्मत करती है।
- खाद्य-विभाग की चीटियाँ, रानी-चीटी और मज़दूर-चीटियों को चीनी और शहद खाने के लिए देती है।

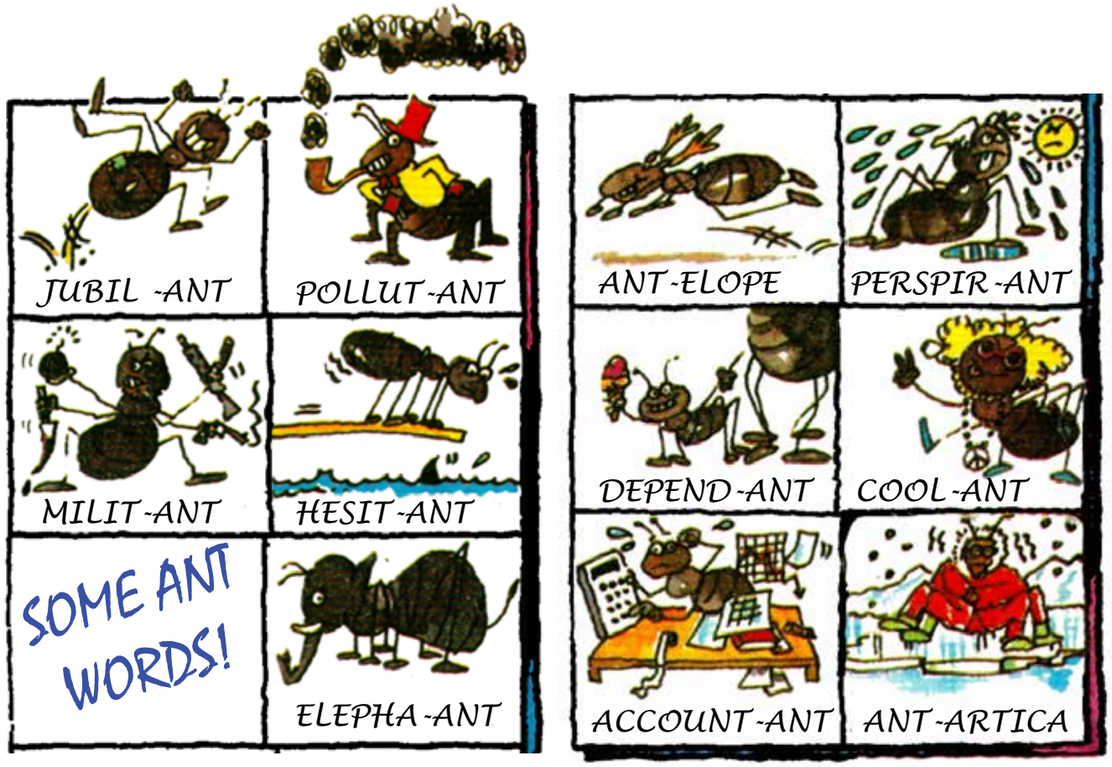

गीता धर्मराजन बच्चों के लिए कहानियाँ लिखना पसंद करती हैं। वह *टारगेट* पत्रिका और *पेन्सिलवेनिया विश्वविद्यालय* की पत्रिका *पेन्सिलवेनिया गज़ेट* की संपादक भी रह चुकी हैं। साहित्य एवं शिक्षा में किए गए इनके अद्वितीय योगदान के लिए इन्हें सन् 2012 में राष्ट्रीय सम्मान पद्मश्री से सम्मानित किया गया था।

अतनु रॉय – एक सौ से भी अधिक बच्चों की किताबों के चित्रकार, अतनु रॉय, ने अपना अधिकतर कल्पना कौशल बाल साहित्य को समर्पित किया है। उत्कष्ट रंगों से सजी उनकी विस्तृत छवियाँ नन्हे पाठकों के मन को छू लेती हैं। फिर यह कोई अचम्भे का कारण नहीं है कि अतनु, जो कि इंडिया टुडे में राजनैतिक कार्टूनिस्ट रह चुके हैं, को बच्चों की चित्रकारी के लिए कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है जैसे चिल्ड्रन्स चॉइस अवॉर्ड फ़ॉर बुक इलस्ट्रेशन और इब्बी सर्टिफ़िकेट ऑफ़ ऑनक फ़ॉर इलस्ट्रेशन। रॉय का स्टूडियो गुड़गाँव में है।

क कथा

कथा एक विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त गैर–लाभकारी संस्था है जो कि शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में सन् 1988 से काम कर रही है। गरीबी में रहने वाले बच्चों की शिक्षा को बढ़ावा देने का व उनके लिए विशेष किताबें बनाने का कथा के पास लगभग 30 साल का अनुभव है।

"भारत के मुकुट पर एक शैक्षिक हीरा!" – **नाओकी शिनोहरा, उपप्रबंध निर्देशक, आईएमएफ**

"कथा का काम इस विचार से प्रेरित है कि बच्चे अपने समुदायों में स्थायी बदलाव ला सकते हैं। जैसे कि बच्चे करते हैं (कथा की किताबों में)।" – **पेपरटाइगर्स**

"कथा बच्चों के लिए नर्म दिल है। तभी तो कथा बच्चों के लिए इतनी खूबसूरत किताबें बनाती है।" – **टाइम आउट**

"कथा दुनिया भर में उन रचनात्मक संगठनों के लिए एक उदाहरण है जो शहरों के सुधार के लिए काम करते हैं।" – **चार्ल्स लैंड्री**, *द आर्ट ऑफ़ सिटी मेकिंग*

पहला हिंदी संस्करण 2021

कृति स्वामित्व © कथा, 1993, 2021
लेखन कृति स्वामित्व © गीता धर्मराजन
चित्राँकन कृति स्वामित्व © कथा
स्वत्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की आज्ञा के बिना इस किताब के किसी भी भाग को छापना अथवा अन्य किसी पुनः प्रयोग विधि के रूप में प्रतिकृति या इस्तेमाल वर्जित है।

नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित

हमारा लक्ष्यः हर बच्चा आनंद और अर्थवत्ता के लिए पढ़ें।

कथा एक पंजीकृत आलंभकारी संस्था है जिसकी स्थापना 1988 में किया गया था। कथा शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में काम करती है। कथा का मुख्य उद्देश्य है बच्चों और बड़ों में पढ़ने में रूचि एवं इससे मिलती खुशी को बढ़ावा देना। कथा 1,00,000 से भी अधिक बच्चों के साथ काम करती है ताकि वे मजे के लिए और कक्षा स्तर पर पढ़ सकें।

ए–3 सर्वोदय एन्क्लेव, श्री औरोबिन्दो मार्ग, नयी दिल्ली – 110017
दूरभाषः 4141 6600 - 4141 6624 - 4182 9998
इ–मेलः marketing@katha-org
वेबसाइटः www-katha-org | www-books-katha-org

इस किताब की बिक्री में मिली राशि का 10% बच्चों की शिक्षा के लिए कथा स्कूल को दिया जाएगा।
कथा नियमित रूप से उस लकड़ी के बदले पेड़ लगाती है, जिससे हमारी किताबों को छापने का कागज बनता है।

'I Love Reading' Library कथा की एक खास श्रृंखला है। यह नए और संकोची बच्चों को सहजता से पढ़ना सिखाती है। इसका पाठ्यक्रम अलग – अलग स्तर पर पढ़ने वाले बच्चों को ध्यान में रख कर बनाया गया है। यह बेहतरीन साहित्य और कला को भारत एवं दुनिया भर से एकत्रित कर बनायी गयी है।

यह किताबें गीता धर्मराजन के 'StoryPedagogy' पर आधारित हैं। यह एक खास तरह का मॉडल है जो पहले स्कूल नहीं गए हुए बच्चों के लिए बनाया गया था। बच्चों को 'TADAA' (Think, Ask, Discuss, Act and Achieve) और 'बड़े विचारों' के द्वारा यह उनमें पढ़ने की खुशी और समझने की क्षमता बढ़ता है।

Katha's Holistic Early Learning (KHEL!) लैब सरकारी, निजी और गैर – लाभकारी विद्यालयों में कार्यशालाएँ कराती है। यह ऑनलाइन चलने वाली कार्यशालाएँ हैं। इसमें शिक्षकों, विद्यालय प्रबंधकों और स्वयं सेवकों को प्रमाण पत्र भी दिया जाता है।

अधिक जानकारी के लिए 300m@katha-org पर जाएँ।

यह सभी आई.एल.आर किताबें हैं

आनंद और समझने के लिए पढ़ो

इसकी इंडिगो श्रृंखला में

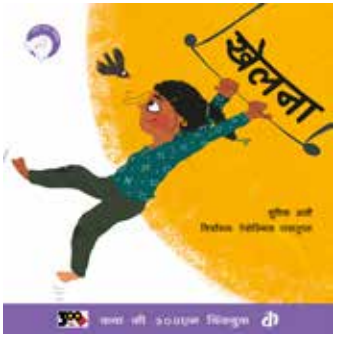

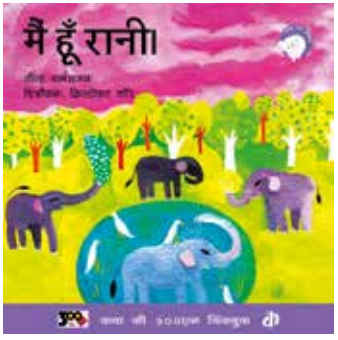

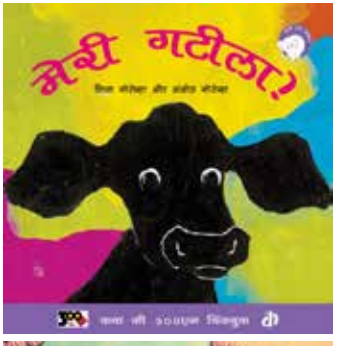

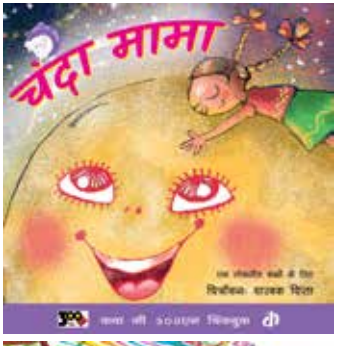

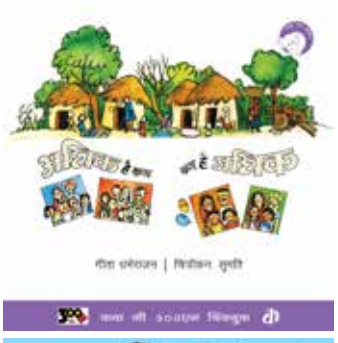

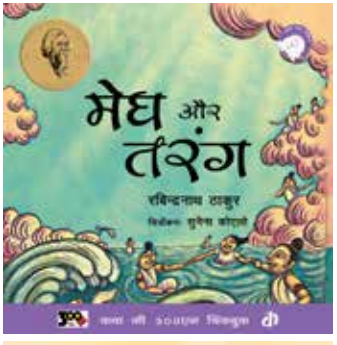

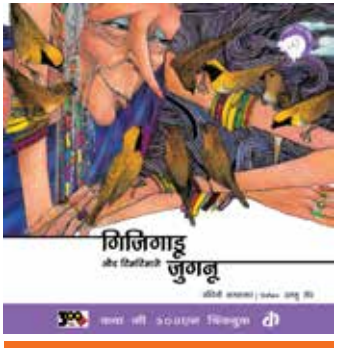

FOR OUR BOOKS

www.books.katha.org

"India's multicultural identity through the stories."

— The Pioneer

for children

a katha book

ISBN 978-93-88284-81-3

9 789388 284813

www.katha.org

₹ xxx